आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 2/मार्च 2023

Received: 05/03/2023; Accepted: 08/03/2023; Reviewed: 22/03/2023; Published: 24/03/2023

कैद में है बुलबुल 'बाबल तेरा देश में', उपन्यास की आवाज

- श्वेता मिश्रा

शोधार्थी,

हिंदी विभाग, श्रीमती सी.एच.एम. कॉलेज,

मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई

8879952471,

pandeysweta012@gmail.com

श्वेता मिश्रा,**कैद में है बुलबुल 'बाबल तेरा देश में', उपन्यास की आवाज**, आखर हिंदी पत्रिका,खंड 3/अंक 2/मार्च 2023,(169-173)

शोधसार-

भारतीय समाज में नारी और पुरुष दोनों का महत्वपूर्ण स्थान है। इन दोनों को गाड़ी के दो पहियों के समान माना गया है। यानी कि एक दूजे के बिना दोनों अधूरे हैं। भारत के तमाम जाति, वर्ग, धर्म के लोगों में आत्मविश्वास के साथ कहा जाता है कि बेटियाँ अपने मातापिता से सर्वाधिक प्रेम करती हैं-, बल्कि पिता से कुछ अधिक ही करती हैं। कहा तो यह भी जाता है कि जिस घर में बेटी है उस घर के वृद्ध मातापिता को - कभी वृद्धाश्रम की सीढ़ियाँ नहीं चढ़नी पड़ती। भारतीय संस्कृति का निर्माण त्याग के आदर्श पर हुआ है, परंतु यह भी कटु सत्य है कि इसी भारतीय संस्कृति में बेटे को कुल का दीपक माना जाता है, यद्यपि बेटियां कुलदीपक तो नहीं होती पर कुलदीपक से कम भी नहीं होती। इसी कथ्य को उपन्यास के माध्यम से मंच पर प्रस्तुत किया जाता है। इससे उपन्यास के मूल भाव को जनमानस तक स्पष्ट किया जा सकता है। उपन्यासों का प्रदर्शन भी वर्तमान समय में बढ़ता जा रहा है। भ्रष्टाचार, कालाबाजारी, बेरोजगारी, लूटपाट, बलात्कार, जातपात और समसामयिक मुद्दों के बारे में उपन्यासों के माध्यम से जन समाज को जागरूक - करते हैं।

बीजशब्द: सांस्कृतिक मान्यताएँ ,परंपराएँ ,रूढ़ियाँ ,स्त्रीपुरुष संबंध-, विवाहेतर संबंध, देह, प्रेम, प्रेमी, चरम आवेग, दैहिक संबंध, दाम्पत्य पवित्रता, अवैध संबंध, अस्तित्व, उत्सव, विद्रोही चरित्र आदि।

प्रस्तावना:

एक हमारी संस्कृति में मातृ देवो भवः, पितृ देवो भवः, आचार्य देवो भवः के अनुसार माता का स्थान पिता और गुरु के स्थान से पहले निश्चित किया गया है। इसके अलावा 'यत्र नारी पूज्यंते रमंते तत्र देवता' एवं 'एक नहीं दोदो मात्राएं नर से बढ़कर नारी-', जैसी उक्तियाँ नारी की महत्ता को सिद्ध करने के लिए पर्याप्त हैं। भारतीय समाज में सदैव से ही पुरुष प्रधान रहा है। समाज में स्त्री के स्वतंत्र अस्तित्व का

हमारी सांस्कृतिक मान्यताएँ, रूढ़ियाँ, परंपराएं और रीतिरिवाज विरोध करते हैं-, इसलिए सदैव से ही स्त्रियों को पुरुषों द्वारा दबाया जाता रहा है। आजादी के बाद नारी को पुरुषों के बंधन से मुक्त करने के लिए अनेक कानूनी अधिकार दिए गए परंतु महिलाओं में शिक्षा की कमी के कारण वे अपने इन अधिकारों के बारे में जागरूक ही नहीं हैं। विभिन्न अंचलों में आज भी स्त्रियों का शोषण विभिन्न तरीकों से हो रहा है। बाल-विवाह, बेमेल विवाह, दहेज प्रथा, साससुर-, जेठदेवर और ननद तथा गांव के जमींदार एवं दबंगों द्वारा - आज भी स्त्रियों का शोषण हो रहा है। इतना ही नहीं महिलाएं अपनेही घर में सुरक्षित नहीं हैं। एक बेटी के रूप में अपने पिता के द्वारा तो कहीं भाई के द्वारा और कहीं पत्नी के रूप में अपने पति के द्वारा इनका शोषण किया जा रहा है। परंपराएँ, रीतिरिवाज-, धार्मिक अनुष्ठान आज उनके गले की फांस बने हुए हैं। आखिर कब तक इनको कैद में रखा जाएगा।] 1 [मशहूर गीतकार भरत व्यास ने फिल्म बेदर्द जमाना में लिखा है—

कैसी है दुनिया कैसी रीत है
आंखों में आंसू होठों पर गीत हैं
कैसी है दुनिया कैसी रीत है
आंखों में आंसू होठों पर गीत हैं
जालिम जमाने क्या तेरी यही जीत है
बागबान के हाथों में कली कुम्हलाए
कहा भी न जाए, चुप रहा भी न जाए
कैद में है बुलबुल सैयाद मुस्कुराए
कहा भी न जाए, चुप रहा भी ना जाए
कैद में है बुलबुल...

इन पंक्तियों की पड़ताल करते हुए, समाज में महिलाओं के प्रति लोगों की सोच को देखते हुए ऐसी ही एक सुलगती, धधकती, हैरतअंगेज घटनाओं से भरपूर एक गाथा 'बाबल तेरा देश में' भगवानदास मोरवाल वरिष्ठ उपन्यासकार द्वारा कलमबद्ध किया गया है। [2] 'बाबल तेरा देश में' आख्यान है स्त्रियों के उन दुःखों का जो अपने ही घर के असुरक्षित, अभेद्य किले में कैद हैं। इसकी रेहलगी बजबजाती अंधी सुरंगों में कहीं पिता, तो कहीं भाई, कहीं ससुर, तो कहींकहीं पति के रूप में एक आदमखोर भेड़िया घात लगाए - बैठा है और जिसके हर एक नाके पर तैनात है एक पहरेदार अपने हाथ में थामे धर्म ग्रंथों के उपदेशों एवं तथाकथित आदेशों की धारदार नुकिली बरछी। [3]'बाबल तेरा देश में' इसी किले की पितृसत्तात्मक ईंट-गारे से चीनी मजबूत दीवारों और महराबों के बीच दादी, जैतूनी, असगरी, जुम्मी, पारो, शकीला, शगुफ्श्ता, समीना, जैनब, मैना और मुमताज का मौन प्रतिवाद है। वह भी बाहर की दुनिया से नहीं बल्कि हाजी चाँदमल, दीन मोहम्मद, हनीफ, फौजी, जगन प्रसाद, मुबारक अली तथा कलंदर जैसे अपने ही घरों के पहरुओं से। स्त्री का मौन प्रतिवाद अपने ही घर के पहरेदारों से है ना कि समाज के अन्य पुरुषों से।

इस उपन्यास की कथावस्तु इस प्रकार बुनी गई है कि मुस्लिम समाज की स्त्रियों की यातनाएँ एक सिरे से दूसरे सिरे तक व्याप्त दिखाई देती है। इस कारण गाथा को लेखक ने जीवंत पात्रों के द्वारा अद्भुत कथा संसार में बदल दिया है। यह उपन्यास दुनिया की आधी आबादी का वह सच सामने लाता है, जिसे लोकतंत्र की न्यायवादी प्रक्रिया पीछे अंधेरे की तरह वंचित करके रखा गया है। पितृसत्ता की चालाकियों ने बहुत व्यवस्थित ढंग से उसके शोषण सारणियाँ तैयार की है। हाल ही में आई 'आदर्श बहू निर्माण' की खबरें भले ही दृश्यमान एजेंडे में शामिल ना हो, किन्तु वर्षों से समाज ऐसी ही स्त्री की कल्पना करता आया है। उसके लिए घर की चारदीवारी दरअसल उसे महफूज रखने की एक तयशुदा साजिश है। स्त्री के चारों ओर

की गई 'इस किलेबंदी' में धर्म ने हमेशा ही मजबूत पहरेदार की भूमिका निभाई है। कभी भय का पहाड़ा पढ़ाकर, कभी परलोक की ज्यामिति सिखाकर, कभी पतिव्रता त्यागमयी लोकोक्तियां रटवाकर। [4] इस उपन्यास का कथानक संपूर्ण भारतीय समाज की कथा बाँचता है। यहां जितनी मात्रा में मुस्लिम जिंदगियाँ हैं उतनी ही मात्रा में हिंदू समाज भी मौजूद है। दोनों ही अंधेरा स्त्री के हिस्से में आता है।

उपन्यास में शकीला तथा अन्य स्त्री पात्रों के व्यक्तित्व का अवलोकन करने पर पता चलता है कि पारंपरिक समाज में औरत होने की पहली शर्त है समर्पण, सर से पांव तक आत्मसमर्पण। भली स्त्री वह है, जो अपने पुरुष को खुश रखें। मुस्लिम समाज की यह कड़वी सच्चाई है कि वहां पत्नी की कीमत मेहर है। जिंदगी का फैसला 'तलाक, तलाक और तलाक' जैसे तीन शब्दों पर टिका हुआ है। पवित्र ग्रंथ कुरान कहता है -'पुरुष स्त्रियों के स्वामी हैं जो नेक स्त्रियां होती हैं वे आज्ञाकारी और अपने रहस्यों की रक्षा करने वाली होती हैं। जिन स्त्रियों से विद्रोह होने का भय हो उन्हें समझाओ, अपने बिस्तरों से दूर रखो और उन्हें कुछ सजा दो' (कुरान ४। वहीं दूसरी ओर पवित्र ग्रंथ कुरान यह भी कह(३४:५:ता है कि, स्त्रियां चाहे तो 'खुल्ला' कर सकती हैं। पैगंबर मोहम्मद ने तलाकशुदा या विधवा औरत से शादी का आदेश दिया है।

इसके बावजूद शरीयत कानून की धज्जियां उड़ाते हुए या यूं कहा जाए उसे नेस्तानाबूद करते हुए पुरुष स्वयं तलाकशुदा है अथवा 60 या 40साल में कदम रख चुके हैं, उनकी पहली प्राथमिकता कुंवारी लड़कियां ही होती हैं।

उपन्यास की नायिका शकीला साल की लड़की है तथा हैदराबाद के गरीब मुस्लिम परिवार से 16 साल के दीन मोहम्मद के हाथों बेच दिया जाता है। दीन मोहम्मद 60 है। महज़ चंद रुपयों के लिए उसे शकीला को तीन बेटियों की मां बनाकर मझधार में छोड़ स्वर्ग सिधार जाता है। शरीयत कानून के मुताबिक पिता की संपत्ति में सिर्फ बेटों का अधिकार है। अतः दीन मोहम्मद की बहूबेटे शकीला तथा उसकी- [5] बच्चियों को जायदाद से बेदखल कर देते हैं।उपन्यास के एक और स्त्री पात्र मुमताज की शादी नपुंसक अखलाक से हो जाती है। अंत में अखलाक मुमताज को 'खुल्ला' देकर पंखे से लटक कर अपनी ही जान देता है। उपन्यास का एक अन्य पात्र दीन मोहम्मद का भतीजा तथा हाजी चांदमल का पोता मुबारक अली अपनी चांद सी पत्नी शगुश्फ्ता को महज एक छोटी सी घटना के लिए तलाक देता है।

सजायाफ्ता शगुश्फ्ता अपना पक्ष रखने की पुरजोर कोशिश करती है, चीखतीचिल्लाती तथा रहम- की गुहार लगाती है लेकिन शगुश्फ्ता की वापसी तभी संभव हो सकती है, जब वह किसी दूसरे से शादी कर बकायदा पत्नी धर्म का पालन कर उसकी मर्जी से तलाक लेकर वापस आती है। मुबारक अली समझौते को मानने से साफ इनकार कर देता है। रोतीबिलखती शगुश्फ्ता अपने दो बच्चों के साथ हमेशा के लिए मायके - [6] वापस आ जाती है।वहीं दादी जैतूनी का देवर चांदमल अपने जीवन का साँठ दहाई पार कर चुका है। हज यात्रा भी कर चुका है लेकिन अपने बेटे वाली मोहम्मद की पत्नी जुम्मी का शारीरिक शोषण करता है। एक तरफ जहां मुस्लिम समाज में स्त्रियों की स्थिति बद से बदतर है वहीं बीरपुर गांव के हिंदू स्त्रियों की स्थिति भी काफी खस्ताहाल है। इस बात का जीताजागता उदाहरण धन सिंह का परिवार-, बेटा हीरा तथा बहू बत्तो है। बत्तो की तीन बेटियां रामरति, कौशल्या तथा मैना है। तीनों बहनों की शादी एक ही परिवार में होती है। मैना जहां पढ़ाई में अव्वल आती है, वहीं उसका पति आवारा, शराबी और बददिमाग है एवं दसवीं में लगातार फेल होता चला आ रहा है। अंततः वह अपनी पत्नी मैना पर चरित्रहीनता का इल्जाम लगाकर उसे घर से बेघर कर देता है। वहीं एक और स्त्री पात्र चंद्रकला अपने पिता के दुष्कर्म का शिकार होने से बचने के लिए अपने खेत में काम करने वाले मजदूर फत्तो जो कि एक स्वयं मुसलमान है, के साथ भागकर शादी कर लेती है एवं पारो के रूप में अपना नया जीवन शुरु करती है।

[7]उपन्यास की सशक्त पात्र शकीला स्त्री सशक्तिकरण की दिशा में शिक्षा की मशाल लेकर खड़ी होती है। उसका साथ हवेली की सबसे बुजुर्ग महिला दादी जैतूनी बखूबी निभाती है। शकीला जब लड़कियों को पढ़ाने का अभियान आरंभ करती है तो व्यंग्यपूर्वक उन बच्चियों को शकीला की फौज कहा जाता है, लेकिन जब ये बच्चियाँ आत्मविश्वास अर्जित कर लेती हैं और सदियों से चले आ रहे अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने की योग्यता अर्जित कर लेती हैं तो वह व्यंग सम्मानोपाधि बन जाता है। शुरूशुरू में तो शकीला को - बार सुनने का उस-बहुत बुरा लगा था लेकिन आज तो इस संबोधन को बारका मन कर रहा है। पूरे मोहल्ले से कहे कि आज से खूब कहें उसे याद आया यह संबोधन सबसे पहले उसने दादी जैतूनी के मुँह से सुना था।

[8]उस दिन मुमताज, सबीना, फिरोजा, फोजिया, मैना, सलीमा, नफीसा, नसरीन चिड़ियों के झुंड से चहकतीपी-फुदकती जा रही थी। शकीला के साथ पीछे-छे जैतूनी भी थी। उनके छज्जे पर खड़ी शकीला को देखकर मुस्कुराते हुए कहा था उससे 'ले आगी है तेरी फौज' फौज क्या वह इन्हें किसी लड़ाई के लिए तैयार कर रही है? सचमुच बहुत बुरा लगा था शकीला को उस दिन दादी जैतूनी के व्यंग का अर्थ वह नहीं समझ पाई। बाद में तो हवेली से लेकर पूरे मोहल्ले तक यह दास्तां शकीला की फौज के नाम से जाना जाने लगा। आज यही फौज शकीला की पहचान बन गई है। इसी फौज के कारण उसका अस्तित्व बचा हुआ है 'बाबल तेरा देश में'।

इस उपन्यास में धर्म ग्रंथ, परंपराएं, रीतिरिवाज तो उनके पैरों में बँधी बेड़ियों के समा-न है। 'बाबल तेरा देश में' मुस्लिम औरतें अपने धर्म ग्रंथ के कारण ही दुःख झेलने को मजबूर हैं। [9]धर्मकर्म-, रीतिरिवाज लोगों पर इस कदर हावी है-, इसका प्रमाण हमें धन सिंह के इस कथन से मिलता हैइतन" -ो आसान ना है रामचंदर अरे, तोहें तो सब मालूम है कि रीतिरिवाज-, धर्मकर्म-, बिरादरी और कौम भी कोई चीज होबे है। बत जब घर में है चाहे जैसे मन करे सुलझा लोगे पर देहली पर करते ही आदमी का बस सू बाहर हो जावे हैं। मैं तो बहुत कोशिश करी है पर हदीस और शरीयत के आगे एक ना चली। "लेखक शकीला के चरित्र को मजबूती प्रदान करते हुए उसी गांव का सरपंच तक बना देता है। इस संदर्भ में उपन्यास की कुछ प्रमुख समस्याएं द्ष्टव्य है। लेखक ने ग्रामीण समाज में व्याप्त सड़ांध के साथसाथ राजनैतिक भ्रष्टाचार - दीन मोहम्मद-को भी उजागर किया है। मुस्लिम समाज की करुणगाथा को शकीला, हाजी चांदमलजुम्मी-, शगुश्फ्तामुबारक अली-, मुमताजलियाकत अली जैसे पात्रों के रूप में बहुत ही मार्मिक रूप से चित्रित - किया गया है। स्त्री चाहे मुस्लिम समाज की हो या हिंदू समाज की पुरुष द्वारा ओढ़े गए रिश्तो के मुखौटों से ता है उसे बखूबी दर्शाया गया है।किस प्रकार उसका मोहभंग होऔरत की शारीरिक शोषण की कहानी भी विवेच उपन्यासों में प्रमुखता से व्यक्त की गई।

[10]'आछरीमाछरी-' में जहां आछरी तुलसा पंथ की हवस का शिकार होकर अपने परिवार द्वारा त्याग दी जाती है, वहीं पर 'बाबल तेरा देश में' घर की बहुएँ अपने ससुर की हवस का शिकार बनती हैं। इस उपन्यास में स्त्रियों के शोषण का असली कारण नसीब खान स्वीकार करता है। एक बात और बता दूँ कि " "हमारा जितना भी धर्म ग्रंथ है उनका सहारा लेकर के सबसे ज्यादा जुल्म भी या औरत जात पर ही हुआ है।

[11]हवेली के लोगों द्वारा शकीला को रूप बदलने वाली साँपन समझना, जो हर रात अपना रूप बदलकर दीन मोहम्मद पर जादूटोने की धारणा की -टोने करती है। ग्रामीण समाज में फैले अंधविश्वास एवं जादू- तरफ सहज इशारा करता है। दादी जैतूनी के बचपन की यादों को लेखक ने सफलतापूर्वक चित्रित किया है। पुरुषों के कोमल-इन सबके अलावा पारो तथा फत्तो का प्रेम स्त्रीपक्ष को उजागर करता है। उपन्यास में दादी जैतूनी, शकीला मुमताज, फोजिया, मैना आदि जीवंत पात्रों के माध्यम से तीन पीढ़ियों का संघर्ष दर्शाया गया है। हरियाणवी लोकगीत, मुहावरे, गाली वहां की लोकभाषा खड़ी बोली के साथ घुलमिलकर कथ्य में -

मिठास घोलती है। भाव संवेदनाएवं भाषिक संरचना का तालमेल उपन्यास को सहजता एवं सरसता प्रदान करता है।

यह विमर्श नहीं है समृद्धि संसार की स्त्रियों की उस मुक्ति का, जो उन्हें कभी और कहीं भी मिल सकती है, अपितु यह अपनी निजता और शुचिता बचाए रखने का लोमहर्षक उपाख्यान भी है। [12]लोक-जीवन औरकिस्सागोई की तरंगों से लबरेज यह ऐसे जीवंतसमाज का आख्यान भी है-, जो पाठकों को कथा-पक्ष से मुठभेड़ कराता-रस के विभिन्न आस्वादों तथा अपने अभिनव कला, रेत-माटी से सने पाँवों के ऊबड़-खाबड़ मेड़ों पर, जेठ की तपती धूप में चलने जैसा अहसास दिलाता है। भगवानदास मोरवाल का यह उपन्यास **'बाबल तेरा देश में'** निःसंदेह इस अवधारणा को तोड़ता है कि आजादी के बाद मुस्लिम परिवेश को आधार बनाकर उपन्यास नहीं लिखे जा रहे हैं। बारबार इस उपन्यास को पढ़ते हुए यह प्रश्न मन में -विलास की वस्तु क्य-कचोटता है कि भारतीय समाज में आज भी स्त्री भोगों है? क्या आगे भी ऐसा ही चलता रहेगा? लेखक ने संकेत दिया है कि स्त्रियां यदि पढ़ीलिखीं हों अपने उत्तराधिकारों के प्रति सचेत हों -तो इस शोषण प्रधान व्यवस्था को चुनौती दे सकती हैं तथा सार्वजनिक जीवन को प्रभावित करने वाले पदों पर पहुंचकर सामाजिक परिवर्तन की दिशा तय कर सकती हैं।

भारतीय समाज में महिला और उनके खिलाफ बुरी प्रथाओं के मुख्य कारणों को समझना और उन्हें हटाना होगा, जो कि समाज की विसंगतियाँ और पुरुष प्रभावयुक्त व्यवस्था है। इन सबके लिए भी जरूरी है कि उनके आत्मविश्वास को जीता जाए, ताकि वह अपने आप को सुरक्षित महसूस कर सकें। यद्यपि ग्रामीण औरतों में भी अभी भी शिक्षा की कमी है, पर पढ़ीलिखी स्त्रियां उन्हें शिक्षित करने के लिए आगे आ रही हैं। -स्त्रियां आज न केवल गांव की मुखिया बल्कि उच्च अधिकारी भी बन रही हैं, जिससे उनमें नेतृत्व क्षमता भी बढ़ती है और वे अन्य स्त्रियों को भी इसके लिए प्रेरित करती हैं और समाज को भी इनका साथ देना चाहिए, ताकि आने वाले समय में एक सुनियोजित भविष्य बना सके। समय हैसोच में परिवर्तन लाने का। -

<u>संदर्भ सूची</u>

1. बेदर्द जमाना क्या जाने @ IMDB भरत व्यास -गीतकार ,
2. 'बाबल तेरा देश में'— भगवानदास मोरवाल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण-2010
3. वही पृ .113
4. वही पृ .301
5. वही पृ303 .
6. वही पृ305 .
7. वही पृ .441
8. वही पृ .443
9. वही पृ .447
10. हरिसुमन विष्ट, 'आछरीमाछरी-, पृ .104'
11. 'बाबल तेरा देश में'— भगवानदास मोरवाल, वही पृ .490
12. 'बाबल तेरा देश में'— भगवानदास मोरवाल, वही पृ .492

****